28-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे बच्चे - अभी तुम अमरलोक की यात्रा पर हो, तुम्हारी यह बुद्धि की रूहानी यात्रा है, जो तुम सच्चे-सच्चे ब्राह्मण ही कर सकते हो"

प्रश्नः- अपने आपसे वा आपस में कौन सी वार्तालाप करना ही शुभ सम्मेलन है?

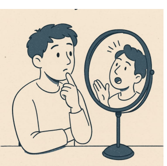

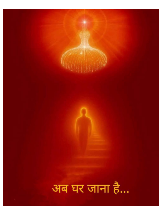

उत्तर:- अपने आपसे बातें करो कि "हम आत्मा अब इस पुराने छी-छी शरीर को छोड़ वापिस घर जायेंगे। यह तन कोई काम का नहीं, अब तो बाबा के साथ जायेंगे।" आपस में जब मिलते हो तो यही वार्तालाप करो कि सर्विस वृद्धि को कैसे पाये, सबका कल्याण किस तरह हो, सबको रास्ता कैसे बतायें... यही शुभ सम्मेलन है।

गीत:-दिल का सहारा टूट न जाये... Click

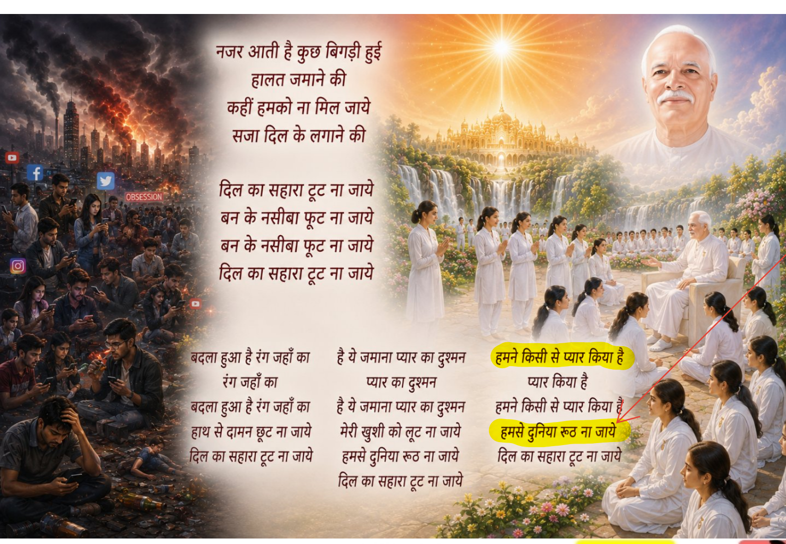

चाहे सारी की सारी दुनिया रूठे तो रूठे ...
मुझे तो बस एक तू चाहिए...

लखाँ तों जुदा मैं होया तेरे ख़ातिर
तू ही मंज़िल, दिल तेरा मुसाफ़िर

तेरे लिए मैं जहाँ से टकराऊँगा
सब कुछ खोके तुझको ही पाउँगा
दिल बन के मैं दिल धडकाऊँगा
मैं तेरा बन जाऊँगा

सोंह तेरी मैं क़सम यही खाऊँगा
कित्ते वादेया नू उमराँ निभाऊँगा
तुझे हर वारी (हर कल्प में)
अपणा बनाऊँगा
मैं तेरा बन जाऊँगा...

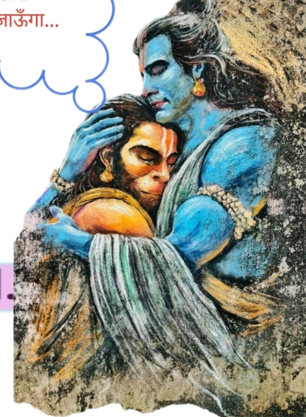

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे, सभी सेन्टर्स के ब्रह्मा मुख वंशावली सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल भूषण अपने कुल को जानते हैं, जो जिस कुल के होते हैं वह अपने कुल को जानते हैं। चाहे कम कुल वाले हों वा अच्छे कुल वाले हों, हर एक अपने कुल को जानते हैं और समझते हैं कि इसका कुल अच्छा है। कुल कहो वा जाति कहो, दुनिया में तुम बच्चों के सिवाए और कोई नहीं जानते कि ब्राह्मणों का ही सर्वोत्तम कुल है। पहला नम्बर कुल कहेंगे तुम ब्राह्मणों का। ब्राह्मण कुल अर्थात् ईश्वरीय कुल। पहले है निराकारी कुल फिर आते हैं साकारी सृष्टि में। सूक्ष्मवतन में तो कुल होता नहीं। ऊंचे से ऊंचा साकार में है - तुम ब्राह्मणों का कुल। तुम ब्राह्मण आपस में भाई-बहिन हो। बहन और भाई होने कारण विकार में जा नहीं सकते। तुम अनुभव से कह सकते हो कि यह पवित्र रहने की बड़ी अच्छी युक्ति है। हर एक कहते हैं - हम ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं। शिव वंशी तो सब हैं फिर जब साकार में आते हैं तो प्रजापिता का नाम होने के कारण भाई-बहिन हो जाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा है तो जरूर रचता है, एडाप्ट करते हैं। तुम कुख वंशावली नहीं हो, मुख

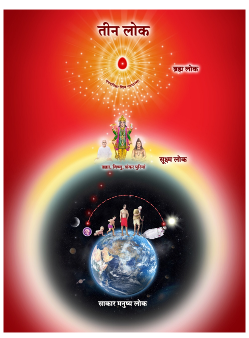

28-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

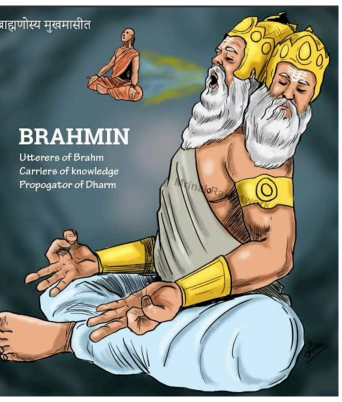

वंशावली हो। तो मनुष्य कुख वंशावली और मुख वंशावली का अर्थ भी नहीं जानते। मुख वंशावली अर्थात् एडाप्टेड बच्चे। कुख वंशावली अर्थात् जन्म लेने वाले। तुम्हारा यह जन्म अलौकिक है। बाप को लौकिक, अलौकिक, पारलौकिक कहा जाता है।

प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक बाप कहा जाता है। लौकिक बाप तो सभी को है। वह तो कॉमन है। पारलौकिक बाप भी सभी का है। भक्ति मार्ग में तो हे भगवान, हे परमपिता सभी कहते रहते हैं। परन्तु इस बाबा (प्रजापिता ब्रह्मा) को कभी कोई पुकारते नहीं हैं। यह बाबा भी होता है ब्राह्मण बच्चों का। उन दोनों को तो सब जानते हैं। बाकी ब्रह्मा में मूँझ पड़ते हैं क्योंकि ब्रह्मा तो है ही सूक्ष्मवतन में। यहाँ तो दिखाते नहीं हैं। चित्रों में भी ब्रह्मा को दाढ़ी मूँछ वाला दिखाते हैं क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ सृष्टि में है। सूक्ष्मवतन में तो प्रजा रच नहीं सकते। यह भी किसकी बुद्धि में नहीं आता है। यह सब बातें बाप समझाते हैं।

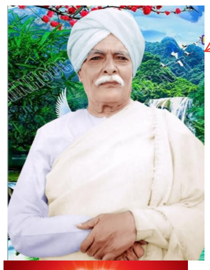

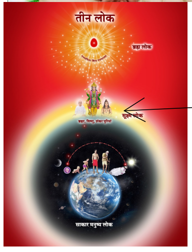

Exclusive Authority of Shiv baba

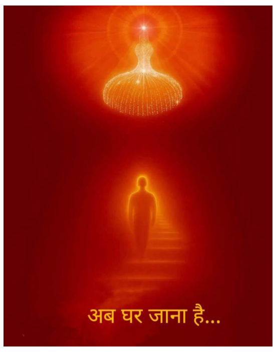

28-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मृत्युलोक अमरलोक

तुम बच्चों की यह रूहानी यात्रा भी गाई हुई है। रूहानी यात्रा वह, जहाँ से फिर लौट नहीं आना है। दूसरी यात्रायें तो सब जन्म-जन्मान्तर करते रहते हैं और जाकर लौट आते हैं। वह है जिस्मानी यात्रा, यह तुम्हारी है रूहानी यात्रा। इस रूहानी यात्रा करने से तुम मृत्युलोक में नहीं लौटते हो। बाप तुमको अमरलोक की यात्रा सिखलाते हैं। वह कश्मीर तरफ अमरनाथ की यात्रा पर जाते हैं। वह कोई अमरलोक नहीं है। अमरलोक एक है आत्माओं का, दूसरा है मनुष्यों का, जिसको स्वर्ग अथवा अमरलोक कह सकते हैं। आत्माओं का है निर्वाणधाम। बाकी अमरलोक सतयुग और मृत्युलोक है कलियुग और निर्वाणधाम है शान्ति लोक, जहाँ आत्मायें रहती हैं। बाप कहते हैं - तुम अमरपुरी की यात्रा पर हो। पैदल जाने की वह शारीरिक यात्रायें है। यह है रूहानी यात्रा, जो सिखलाने वाला एक ही रूहानी बाप है और एक ही बार आकर सिखलाते हैं। वह तो जन्म-जन्मान्तर की बात है। यह है मृत्युलोक के अन्त की यात्रा। यह तुम ब्राह्मण कुल भूषण ही जानते हो। रूहानी यात्रा अर्थात् याद में हो। गाया भी जाता है अन्त मती सो गति। तुमको याद आता ही है बाबा

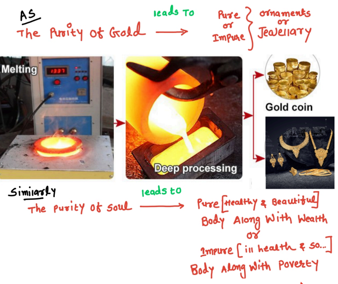

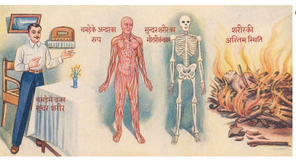

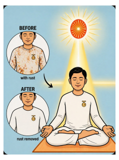

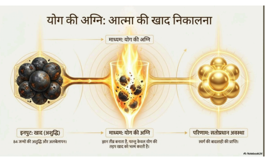

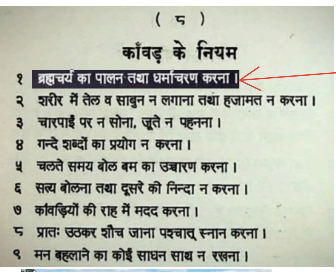
(८)

कांवड़ के नियम

१ ब्रह्मचर्य का पालन तथा धर्माचरण करना।
२ शरीर में तेल व साबुन न लगाना तथा हजामत न करना।
३ चारपाई पर न सोना, जूते न पहनना।
४ गन्दे शब्दों का प्रयोग न करना।
५ चलते समय बोल बम का उच्चारण करना।
६ सत्य बोलना तथा दूसरे की निन्दा न करना।
७ कांवड़ियों की राह में मदद करना।
८ प्रातः उठकर शौच जाना पश्चात् स्नान करना।
९ मन बहलाने का कोई साधन साथ न रखना।

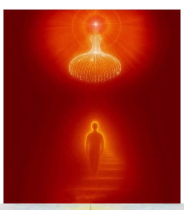

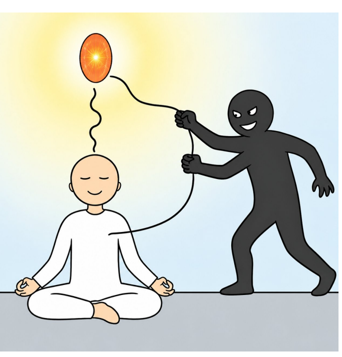

28-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

का घर। समझते हो कि अब नाटक पूरा होता है। यह पुराना वस्त्र, पुराना तन है। आत्मा में खाद पड़ने से शरीर में भी खाद पड़ती है। जब आत्मा पवित्र बनती है तो हमको शरीर भी पवित्र मिलता है। यह भी तुम बच्चे समझते हो। बाहर वाले तो कुछ नहीं समझते। तुम देखते हो कि कोई-कोई समझते भी हैं। कोई की बुद्धि में यह ज्ञान नहीं। समझने वाला होगा तो जरूर किसको समझायेगा। मनुष्य जब यात्रा पर जाते हैं तो पवित्र रहते हैं। फिर घर में आकर अपवित्र बनते हैं। मास दो मास पवित्र रहते हैं। यात्रा की भी सीज़न होती है। सदैव तो यात्रा पर जा न सकें। ठण्डी वा बरसात के समय कोई जा न सकें। तुम्हारी यात्रा में तो ठण्डी वा गर्मी की कोई बात नहीं है। बुद्धि से खुद समझ सकते हो कि हम जा रहे हैं बाप के घर। जितना हम याद करते हैं उतना विकर्म विनाश होते हैं। बाप के घर में जाकर फिर हम नई दुनिया में आयेंगे। यह बाबा ही समझाते हैं। यहाँ भी नम्बरवार बच्चे हैं। वास्तव में यात्रा को भूलना नहीं चाहिए लेकिन माया भुला देती है इसलिए लिखते भी हैं बाबा आपकी याद भूल जाती है। अरे याद की यात्रा - जिससे तुम एवर हेल्दी-वेल्दी बनते, ऐसी दवाई को

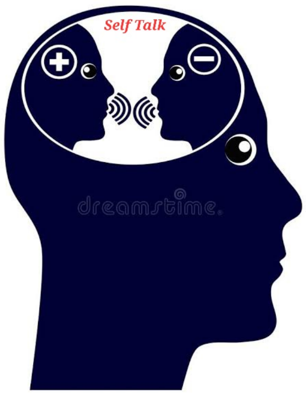

तुम भूल जाते हो। वह यह भी कहते हैं कि बाप को याद करना तो बड़ा ही सहज है। अपने साथ बातें करनी होती हैं कि "हम आत्मा पहले सतोप्रधान थी, अब तमोप्रधान बन गई हैं। अब शिवबाबा हमको युक्ति तो बहुत अच्छी बताते हैं।" बाकी अभ्यास करना है। आंख बन्द कर विचार नहीं किया जाता। (बाबा ने एक्ट करके दिखाई) ऐसे अपने साथ बातें करो कि "हम सतोप्रधान थे, हम ही राज्य करते थे। वह दुनिया गोल्डन एज थी फिर सिल्वर कॉपर आइरन एज में आ गये। अब आइरन एज का अन्त है, तब बाबा आया हुआ है। बाबा हम आत्माओं को कहते हैं कि मुझे याद करो और अपने घर को याद करो। जहाँ से आये हो, तो फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी।" तुमको वहाँ ही जाना है। यह युक्ति बाप बतलाते हैं कि सवेरे उठकर अपने से बातें करो।

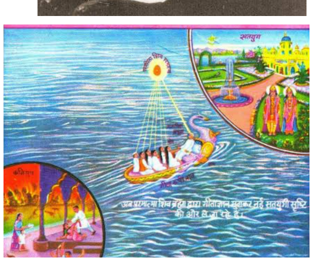

बाबा एक्ट करके दिखाते हैं कि हम भी सवेरे उठ विचार सागर मंथन करता हूँ। सच्ची कमाई करनी चाहिए ना। सुबह का सांई... तो उस सांई को याद करने से तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। बाबा जो करते हैं, जैसे करते हैं, वह बच्चों को भी समझाते हैं। इसमें खिटपिट की बात नहीं है। यह कमाई की बहुत

28-09-2026 प्रात:मुरली " मधुबन

अच्छी युक्ति है। अल्फ को याद करने से बे की बादशाही तो मिल ही जायेगी।

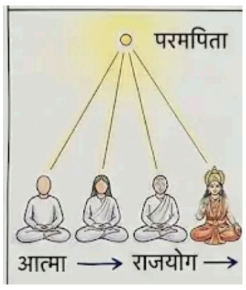

बच्चे जानते हैं कि हम राजयोग सीख रहे हैं। बाबा बीजरूप, नॉलेजफुल है तो हम भी झाड़ को पूरा समझ गये हैं। यह भी मोटे रूप में नॉलेज है। आदि में यह झाड़ कैसे वृद्धि को पाता है फिर कैसे उनकी आयु पूरी होती है और झाड़ तो तूफानों आदि के लगने से गिर जाते हैं। परन्तु इस मनुष्य सृष्टि झाड़ का पहला फाउन्डेशन देवी-देवता धर्म प्राय:लोप हो जाता है। यह भी होना ही है। यह जब गुम हो जाए तब कहा जाए कि एक धर्म की फिर से स्थापना और अनेक धर्मों का विनाश। कल्प-कल्प यह धर्म प्राय: लोप होता है। आत्मा में खाद पड़ जाती है तो जेवर झूठा हो जाता है। बच्चे समझते हैं हमारे में खाद थी, अब जब हम स्वच्छ बनते हैं तो औरों को रास्ता बताते हैं। दुनिया तो तमोप्रधान है। पहले सतोप्रधान हेविन था। तो बच्चों को सवेरे-सवेरे उठ अपने से बातें अर्थात् रूहरिहान करनी चाहिए। विचार सागर

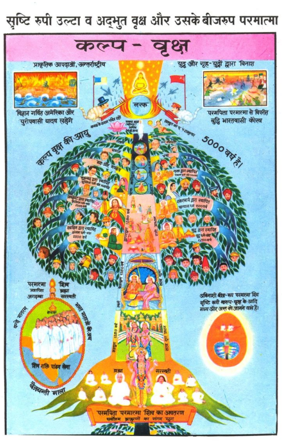

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

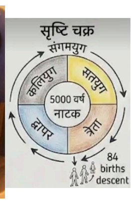

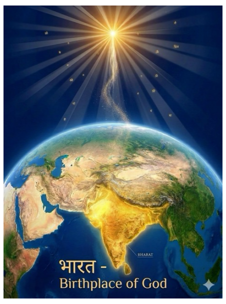

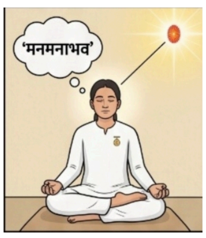

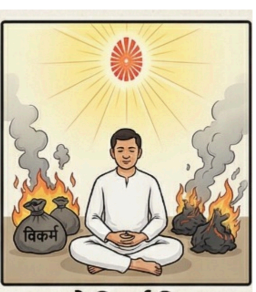

याद से विकर्म विनाश।

मंथन करना चाहिए। फिर किसको समझाना होता है कि यह 84 जन्मों का चक्र है। 84 जन्म कैसे लेते हैं, कौन लेते हैं। जरूर जो पहले आयेंगे वही लेंगे। बाप भी भारत में आते हैं। आकर 84 का चक्र समझाते हैं। बाप कहाँ आये हैं, यह भी नहीं जानते हैं। बाप आकर अपना परिचय खुद देते हैं। कहते हैं कि मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ, मनमनाभव। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। ऐसी समझानी कोई दे न सके। भल गीता आदि सुनाते हैं। वहाँ भी लोग जाते रहते हैं। परन्तु भगवान कभी तो आया होगा, ज्ञान सुनाया होगा। फिर जब आये तब सुनाये ना। वो लोग तो गीता पुस्तक उठाकर बैठ सुनाते हैं। यहाँ तो भगवान है ज्ञान का सागर, इनको कुछ हाथ में ले पढ़ना नहीं है। यह सीखता नहीं है। कल्प पहले भी आकर तुम बच्चों को संगम पर सिखाया था। बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। यह है याद की यात्रा। तुम्हारी बुद्धि ही जानती है - सिवाए ब्रह्मा मुख वंशावली ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जिसके पास यह ज्ञान होगा। सबमें सर्वव्यापी का ज्ञान भरा हुआ है। यह कोई नहीं जानते कि परमात्मा बिन्दी है। ज्ञान सागर पतित-पावन है। सिर्फ ऐसे ही गाते

But we know, How Lucky & Great we are..!

Exclusive Authority of Shiv baba

v/s

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

We have observed this Everywhere

रहते हैं। गुरू लोग जो सिखाते हैं वह सत-सत करते रहते। अर्थ कुछ भी नहीं समझते। न उस पर कभी विचार चलाते तो यह सत्य है वा नहीं।

बाप समझाते हैं कि तुम बच्चों को चलते-फिरते याद की यात्रा में जरूर रहना है। नहीं तो विकर्म विनाश हो नहीं सकते। कुछ भी कर्म करते रहो परन्तु बुद्धि में बाप की याद रहे। श्रीनाथ द्वारे में भोजन बनाते हैं तो बुद्धि में वह श्रीनाथ रहता है ना। बैठे ही मन्दिर में हैं। जानते हैं कि हम श्रीनाथ के लिए बनाते हैं। भोजन बनाया, भोग लगाया फिर घर वाले बच्चे आदि याद आते रहेंगे। वहाँ भोजन बनाते हैं मुख बन्द, बात नहीं करेंगे। मन्सा से कोई विकर्म नहीं बनता है। वह श्रीनाथ के मन्दिर में बैठे हैं। यहाँ तो शिवबाबा के पास बैठे हो। यहाँ भी बाबा युक्ति बताते रहते हैं। बच्चे कोई फालतू बात नहीं करना। सदैव बाप से मीठी-मीठी बातें करनी हैं। जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप की स्मृति में रहता है कि "चक्र कैसे फिरता है," तब तुम बच्चों को आकर सुनाते हैं। तुम

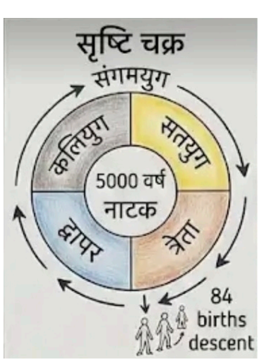

28-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

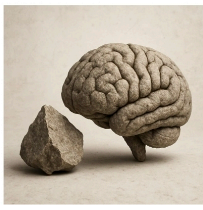

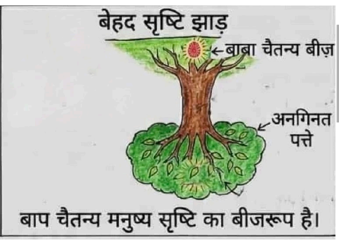

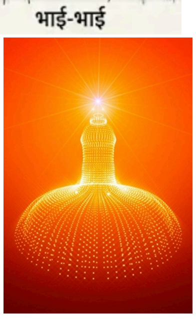

बच्चे जानते हो कि हमारा बाबा मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, चैतन्य है। कितनी सहज बात है। परन्तु फिर भी समझते नहीं हैं क्योंकि पत्थरबुद्धि हैं ना। उस बीज को हम चैतन्य नहीं कहेंगे। यह नॉलेजफुल, चैतन्य है। यह एक ही है। वह बीज तो अनेक प्रकार के होते हैं। भगवान को कहा जाता है - मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। तो बाप हो गया ना। आत्माओं का बाप परमात्मा है तो सभी ब्रदर्स ठहरे, बाप भी वहाँ रहते हैं जहाँ तुम आत्मायें निवास करती हो। निर्वाणधाम में बाप और बच्चे रहते हैं। इस समय तुम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान भाई और बहन हो, इसलिए कहलाते हो - शिव वंशी ब्रह्माकुमार-कुमारियां। यह भी तुमको लिखना है कि हम ब्रह्माकुमार-कुमारियां भाई-बहिन हैं। बाप ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रचेंगे तो भाई-बहिन ठहरे ना। कल्प-कल्प ऐसे ही क्रियेट करते हैं। एडाप्ट करते जाते हैं। मनुष्य को प्रजापिता ब्रह्मा नहीं कहा जाता। भल बाबा कहते हैं परन्तु वह है हद का, इनको प्रजापिता कहेंगे क्योंकि बहुत प्रजा है अर्थात् ढेर बच्चे हैं। तो बेहद का बाप बच्चों को सभी बातें बैठ समझाते हैं। यह दुनिया बिल्कुल बिगड़ी हुई छी-छी है। अब तुमको वाह-वाह

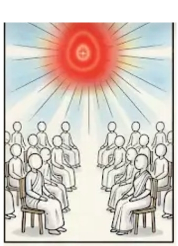

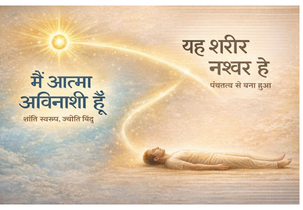

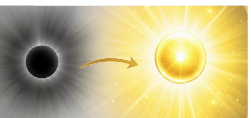

की दुनिया में ले जाते हैं। तुम्हारे में भी बहुत हैं जो भूल जाते हैं। अगर यह याद हो तो बाप भी याद रहे और गुरू भी याद रहे कि अब वापिस जाना है। पुराना शरीर छोड़ देंगे क्योंकि यह तन अब काम का नहीं है। आत्मा अब पवित्र होती जाती है तो शरीर भी पवित्र होना है। आपस में ऐसी-ऐसी बातें बैठ करनी चाहिए, इसको कहा जाता है - शुभ सम्मेलन, जिसमें अच्छी-अच्छी बातें हों। सर्विस कैसे वृद्धि को पाये। कल्याण कैसे करें! उन्हों का तो छी-छी सम्मेलन है, गपोड़े मारते रहते हैं। यहाँ गपोड़े आदि की बात नहीं। सच्चा-सच्चा सम्मेलन इसे कहा जाता है। तुमको यह कहानी सुनाई है कि यह कलियुग है, सतयुग को स्वर्ग कहा जाता है। भारत स्वर्ग था, भारतवासी ही 84 जन्म भोगते हैं। अब अन्त में हैं। अब तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो। इसमें कोई गंगा स्नान आदि नहीं करना है। भगवानुवाच कि मैं सभी का बाप हूँ। श्रीकृष्ण सबका बाप हो नहीं सकता। एक दो बच्चे का बाप श्री नारायण है, न कि श्रीकृष्ण। श्रीकृष्ण तो कुमार है। इस प्रजापिता ब्रह्मा को तो बहुत बच्चे हैं। कहाँ श्रीकृष्ण भगवानुवाच, कहाँ शिव भगवानुवाच। भूल कितनी

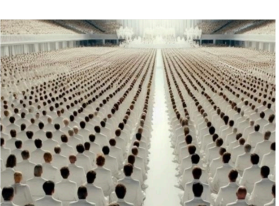
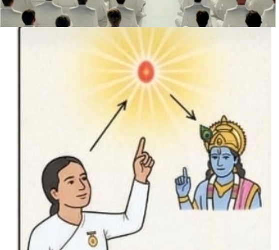

28-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

बड़ी कर दी है। कहाँ भी प्रदर्शनी करो तो मुख्य बात यह है कि गीता का भगवान यह है वा वह? पहले-पहले यह समझाना चाहिए कि भगवान शिव को कहा जाता है। यह बुद्धि में बिठाना है। इस पर प्रोब होना चाहिए। गीता के भगवान का चित्र भी बड़ा परमानेन्ट होना चाहिए। नीचे में लिख देना चाहिए कि जज करो और आकर समझो। फिर लिखाकर सही लेनी चाहिए। अच्छा!

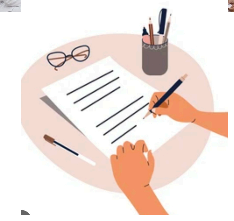

Judge Yourself

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

28-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) आपस में शुभ सम्मेलन कर सर्विस की वृद्धि के प्लैन बनाने हैं। अपने और सर्व के कल्याण की युक्ति रचनी है। कभी भी कोई व्यर्थ (फालतू) बातें नहीं करनी हैं।

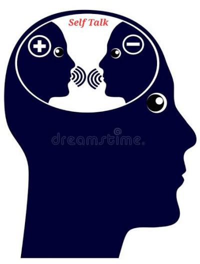

2) सवेरे-सवेरे उठकर अपने आपसे बातें करनी हैं, विचार सागर मंथन करना है। भोजन बनाते एक बाप की याद में रहना है। मन्सा भी बाहर न भटके, यह ध्यान रखना है।

28-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-सर्व आत्माओं पर स्नेह का राज्य करने वाले विश्व राज्य अधिकारी भव

जो बच्चे वर्तमान समय सर्व आत्माओं के दिल पर स्नेह का राज्य करते हैं वही भविष्य में विश्व के राज्य का अधिकार प्राप्त करते हैं।

अभी किसी पर आर्डर नहीं चलाना है। अभी से विश्व महाराजन नहीं बनना है, अभी विश्व सेवाधारी बनना है, स्नेह देना है। देखना है कि अपने भविष्य के खाते में स्नेह कितना जमा किया है।

विश्व महाराजन बनने के लिए सिर्फ ज्ञान दाता नहीं बनना है इसके लिए सबको स्नेह अर्थात् सहयोग दो।

स्लोगन:-जब थकावट फील हो तो खुशी में डांस करो, इससे मूड चेंज हो जायेगी।

28-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "ब

ये अव्यक्त इशारे -

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

बापदादा अब बच्चों से यही चाहते हैं कि मेरा हर एक बच्चा मास्टर दाता बनें।

ज्ञान रत्नों से झोली भरकर दान।

अब रहमदिल बन अपने गुणों का, शक्तियों का सबको सहयोग दो, फ्राकदिल बनो।

जितना दूसरों को देते जायेंगे उतना बढ़ता जायेगा।

विनाशी खजाना देने से कम होता है और अविनाशी खजाना देने से बढ़ता है - एक दो, हजार पाओ।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

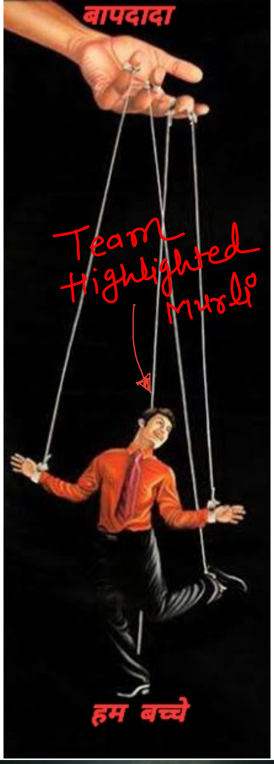

ओम शांति,

30 September 2026 को इस हाइलाइटेड मुरली की सेवा को 6.5 साल(78 मास)पूरे हो रहे हैं (इसको 30/3/2020 को दादी जानकीजी के अव्यक्त होने के दो- तीन दिन बाद शुरू किया था) तो इस उपलक्ष में यहां पर Team आपके साथ एक गूगल फॉर्म शेयर कर रहे हैं जिसके द्वारा ये जान पाएंगे कि...

1. आपको Highlighted मुरली से क्या प्राप्ति हो रही है एवं आप इसको अपने पुरुषार्थ में कैसे उपयोग में लेते है ?(Experience)
2. आपके Highlighted मुरली के बारे में प्रतिभाव। (feedback)

कोई भी प्रणाली/System सुचारू रूप से तब ही चल सकती है जब उस प्रणाली को उपयोग में लाने वाले उपयोगकर्ताओं के Feedback को ध्यान पर लिया जाए और उन feedbacks के अनुरूप नवीनता लाई जाए।

इसलिए
कृपया अपने सुझाव एवं प्रतिभाव अवश्य साझा करें, आपके अनुभव, सुजाव एवं प्रतिभाव हमे आगे के लिए पथ प्रदर्शन में सहयोगी बनते है। (क्योंकि पहले भी आप श्रेष्ठ आत्माओं के feedback के आधार से ही gradually बहुत सारे changes किए हुए है।)

आपको जो अच्छा लगता है उसको और ज्यादा बेहतर करने का प्रयास करेंगे। और नहीं अच्छा लगता उसको मिटाने का प्रयास करेंगे।

आपके द्वारा भेजे गए Feedback में से कुछ एक Feedback को यहाँ पर साझा करेंगे, जिससे कि आपके अनुभवों का बल उन आत्माओंको उनके पुरुषार्थ में प्रेरणा एवं उत्साह मिल सकें ।

शुक्रिया, ओम शांती।

Team Highlighted Murli

Link of Google Form ===> **Click**

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें

(अ) मीठे बच्चे अमृतवेले उठ बाप की याद का घृत रोज़ डालो, तो आत्मा रूपी ज्योति सदा जगी रहेगी। घृत डालने के लिए सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। आत्मा रूपी ज्योति को प्रज्वलित करने के लिए सवेरे-सवेरे याद की यात्रा में बैठना है। याद से ही आत्मा की जंक निकलेगी, फिर सच्चा सोना बनेगी।

(आ) मीठे बच्चे, **शिव बाबा की नम्बर वन श्रीमत है सवेरे-सवेरे उठ मुझ बाप को याद करो, तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा।** कहते हैं सुबह का साईं। व्यापारी लोग सुबह को दुकान के आगे माथा टेक कर फिर अन्दर घुसते हैं क्योंकि आमदनी होती है ना! आमदनी के लिए कहते हैं — ''सुबह का साईं बेड़ा बने लाईं... ऐसे कहते हैं। साईं बाबा है रात को दिन बनाने वाला। रात का साईं है रावण। रात को दिन बनाने वाला साईं बाबा यह एक ही है और बहुत भोला है। नाम ही है भोलानाथ। भोली कन्याओं-माताओं पर ज्ञान का कलश रखते हैं। उन्हों को वर्सा दे, विश्व का मालिक बनाते हैं। तुम अपने बाप को सवेरे उठकर याद करते रहो तो एकदम बेड़ा पार हो जायेगा।

The World Almighty's Guarantee

(इ) बाप कहते हैं **रात को जागो। तुम्हारी तबियत खराब नहीं होगी।** योग से तो और ही बल मिलेगा। स्वदर्शन चक्रधारी बन चक्र फिराओ। **हे नींद को जीतने वाले लाडले बच्चे! याद से ही विकर्म विनाश होंगे।** मुख्य बात है सवेरे उठ कर अल्फ़ को याद करना। यह वेला सोने की नहीं है। इस उपाय से ही विकर्म विनाश होते हैं। और कोई उपाय नहीं। बाप तुम बच्चों के साथ कितना वफ़ादार है! कभी तुम को छोड़ेंगे नहीं। आये ही हैं सुधार कर साथ ले जाने। याद

One & Only way

नर + सिंह

की यात्रा से ही तुम सतोप्रधान होंगे। भक्त लोग भी सुबह सवेरे उठते हैं। माला आदि फेरते हैं। तुम बच्चों को सवेरे उठ बाप को याद करना चाहिए। विकर्म विनाश के लिए योग-अग्नि चाहिए।

(ई) मीठे बच्चे, **रोज़ अमृतवेले ज्ञान-योग की वास धूप जगाओ, तो विकारों रूपी भूत भाग जायेंगे।** अमृतवेले बाबा की याद अच्छी रहती है। कहते हैं सिमर-सिमर सुख पाओ। भक्त लोग भी कहते राम सुमिर प्रभात मोरे मन...।

(उ) हे रूहानी योद्धे, तुम सदा श्रीमत पर चलते रहो। आत्म-अभिमानी बन बाप को याद करो। रोज़ सवेरे-सवेरे उठ याद में रहने का अभ्यास डालो, तो **माया पर विजय प्राप्त कर लेंगे।** याद की मीठी युक्ति मायाजीत बना देगी। पवित्र होने के लिए याद के सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

(ऊ) मीठे बच्चे, अमृतवेले उठ बाप से मीठी-मीठी बातें करो, तो **शरीर का भान खत्म हो जायेगा, सिमरण करते-करते अन्त मति सो गति हो जायेगी।** ऐसी प्रैक्टिस करनी है जो अन्त में देह भी याद न पड़े।